B.A part-III Paper-VI
23/05/2020
Metaphysics
Dr. Anita Kr. Gupta
J. K. College Biraul
LNMU Darbhanga.



| February 2011 | Sun | Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| | | | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| | 27 | | | | | | |

## 'Mind body relations'

3 THU

देकार्त ईश्वर के अतिरिक्त चित् और अचित् दो तत्व मानते हैं मन का गुण है विचार (Thought) तथा शरीर का गुण विस्तार Extension है। इस प्रकार चित् और अचित् के विचार तथा विस्तार दो गुण हुए। मन तथा शरीर दोनों विरोधी तत्त्व हैं। मन सक्रिय है तथा शरीर निष्क्रिय। मन में विस्तार नहीं हो सकता तथा शरीर में विचार नहीं हो सकता। जड़ में में चेतना का नितान्त अभाव है तथा चेतना में जड़ता कैसी? इस प्रकार दोनों दो भिन्न तत्त्व हैं। प्रश्न यह है कि इन दोनों विभिन्न तत्त्वों में किसी प्रकार का संबंध है या नहीं? इन दोनों तत्व विरोधी हैं तो इनमें पारस्परिक संबंध नहीं हो सकता।

देह-मन- अन्तर्क्रियावाद (Body-Mind interactionism)

4 FRI

चेतना तथा जड़ दोनों विरोधी हैं, अतः इनमें कोई पारस्परिक संबंध संभव नहीं। परन्तु यहाँ अनुभव का अपलाप स्पष्ट हो रहा है। हम मन तथा शरीर में अन्तर्क्रिया का प्रतिदिन अनुभव करते हैं। हमारे शरीर को भूख, प्यास लगती है और मन खिन्न हो जाता है। पुनः मन में दुःख-सुख का भाव उत्पन्न होता है और शरीर क्षीण तथा अप्रसन्न हो जाता है। हमारा मन प्रसन्न रहता है तो चेहरा भी खिला हुआ लगता है, मन में दुःख होने पर या निराश होने पर शरीर भी क्षीण होने लगता है। भूख प्यास शरीर में उत्पन्न होती है परन्तु संतोष का अनुभव मन को होता है। यह कैसे संभव है? तात्पर्य यह है कि यदि मन और शरीर दोनों दो, हैं तो अन्तर्क्रिया कैसे? देकार्त के दर्शन में यहाँ स्पष्ट रूप से असंगति हो रही है। इसका उत्तर देकार्त अपने 'चिद्‌चित् संयोगवाद' सिद्धांत के द्वारा देते हैं। यही देकार्त के अन्तर्क्रियावाद का सिद्धांत कहलाता है। इस सिद्धांत के अनुसार आत्मा और शरीर में यौगिक/पीनियल ग्रन्थि के द्वारा क्रिया-प्रतिक्रिया होती है। शरीर की क्रिया

Notes



| April 2011 | Sun | Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | 1 | 2 |
| | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |

5 SAT

से आत्मा में प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है जिसके फलस्वरूप आत्मा को बाह्य जगत का ज्ञान प्राप्त होता है। इसी प्रकार आत्मा की क्रिया से शरीर में प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। जिसके फलस्वरूप शरीर में विचार के अनुकूल व्यवहार होने लगता है। इसकी प्रतिक्रिया ऐसे है:-

(क) बाह्य-जगत से संवेदनाएं उत्पन्न होती हैं। इन संवेदनाओं को इन्द्रियां ग्रहण करती हैं। इस प्रकार बाह्य विषयक संवेदनाएं उद्दीपक (Exciting) हैं जिनका प्रभाव इन्द्रियों पर पड़ता है।

(ख) इन प्रभावों के फलस्वरूप जैविक शक्ति (Animal spirit) उद्दीप्त होती है।

(ग) जैविक शक्ति के उद्दीप्त होने पर इसके माध्यम से प्रभाव पुरीतत नाड़ी (Pineal gland) तक पहुँच जाते हैं।

(घ) Pineal gland से जैविक शक्ति स्नायु मण्डल में

6 SUN

विचरण करती हुई मांसपेशियों तक पहुँचती है। इसके बाद शारीरिक व्यापार होने लगता है।

इसी प्रकार जब मानसिक विचारों के अनुकूल शारीरिक कार्य होता है तो Pineal gland से जैविक शक्ति स्नायु मण्डलों द्वारा शरीर में क्रिया उत्पन्न करती है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि Pineal gland ही मन और शरीर से मिलन की शय्या है। स्वयं देकार्त का कहना है कि मानव शरीर में (Pineal gland) नामक एक विशेष ग्रंथि है, यह ग्रंथि मन और शरीर का मिलन बिन्दु है। इसी ग्रंथि के द्वारा मन में होने वाली क्रिया-प्रतिक्रिया का प्रभाव शरीर पर पड़ता है तथा शरीर की अन्तर्क्रिया का प्रभाव मन पर पड़ता है। देकार्त इसे एक उदाहरण द्वारा

Notes स्पष्ट करते हैं —" अश्व तथा अश्वरोही दोनों भिन्न हैं

परन्तु उनमें पारस्परिक क्रिया संभव है। जिस प्रकार अश्वारोही अश्व की गति में वेग उत्पन्न करता है अश्व की गति में वृद्धि करता है। उसी प्रकार मन भी शारीरिक क्रियाओं को उत्तेजित करता है।" परन्तु उपरोक्त उदाहरण केवल उपमा है व्याख्या नहीं। अश्व तथा अश्वारोही दोनों में उद्देश्यगत साम्य है, अतः दोनों की प्रकृति प्रायः समान (गति मूलक) कही जा सकती है। परन्तु मन और शरीर दोनों नितान्त भिन्न हैं। जड़ और चेतन, विस्तार और विचार में किसी प्रकार की समता नहीं। परन्तु ~~[illegible]~~ दोनों में अन्तर्क्रिया का अनुभव हमें प्रतिदिन होता है। देकार्त इसकी समुचित व्याख्या नहीं कर पाते। जैनों के जीव और अजीव, रामानुज के चित और अचित, सांख्य के पुरुष और प्रकृति के समान ही देकार्त के मन और शरीर में द्वैत स्पष्ट है।



Scanned by CamScanner